साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 2, अंक 36, मई(प्रथम), 2018

वसंत के वेदमन्त्र को लोग कूजन कहते हैं,यह कूजन वैश्विक है।

लेखक: पद्मश्री डॉ.गुणवंत शाह
अनुवादक: डॉ.रजनीकान्त एस.शाह

संसार से युद्ध और दंगफसाद हटाना है तो वसंत के वेदमंत्र को ग्रहण करना होगा। आखिरकार युद्ध है क्या? युद्ध मूलत: शुष्कता की संतान है। शायद इसी लिए युद्ध के मैदान को `रणमैदान' कहा जाता है।

लोग कहते हैं कि उष्णकाल का आगमन हुआ। कवि कहते हैं कि वसंत आया। ऐसा फर्क अपनी अपनी जीवनदृष्टि के कारण आता है। मायके गई हुई पत्नी जब वापस लौटती है तब तीन प्रकार के विधान सुनने को मिलते हैं। पति यदि मोटी बुद्धिवाला हुआ तो कहेगा : घरवाली मायके गई थी, सो आ गई। मध्यवर्गीय भद्र आदमी कहेगा, आज शाम मेरी पत्नी तेजल आ गई। पति यदि भावुक होगा तो कहेगा, `बहारों फूल बरसाओ मेरा महेबूब आया है'।

संसार को युद्ध और दंगाफसाद मुक्त कराने के लिए तो वसंत के वेदमन्त्र को अपनाना होगा। अंतत: युद्ध है क्या? युद्ध मूलत: शुष्कता की संतान है। शायद इसीलिए युद्ध के मैदान को `रणमैदान' कहा जाता है। इंसान को रणमैदान की नहीं, लतामंडप की चाह होती है। जहां लतामंडप हो वहाँ प्रेम का आक्रमण होता है। तलवारबाजीवाला आक्रमण नहीं होता।

इंसान खंजर से खौफ खाता है,
परंतु द्वेष से भयभीत नहीं होता।
यदि इंसान को द्वेष का डर होता,
तो वह अपने भीतर रहे द्वेष से
भी काँप उठा होता!
इंसान जितना तलवार से डरता है,
उतना ईर्षा से नहीं डरता।
खंजर तो मूलत: द्वेष नामक धातु से
बना हुआ हिंसक हथियार है।
तलवार की धार भी आखिरकार तो
ईर्षा की ही धार है ना?

हजारों वर्ष के अनुभव के बाद भी
इंसान को इतनी सीधी सादी
बात समझ में नही आई।
अरे अणुबम भी अंतत: तो
अहंकार बम ही है।

वर्षाऋतु महान शिक्षिका है। वह हमारे जैसे मंदमति विद्यार्थी को समझाती है, कि जीवन में शृंगार का कोई कम महत्त्व नहीं है। शृंगार अर्थात साज सज्जा। केवल प्रकृति ही प्रेम की पाठशाला बन सकती है, संस्कृति नहीं। भद्रता कभी भी मनुष्य को भोलेपन की दीक्षा नहीं दे सकती। इसी लिए संत तुकाराम कह गये हैं,`` भोलापन तो भक्त का भूषण है।'' आजकल चल रहे क्रिकेट मैच में मुझे युजवेन्द्र चहल की मुस्कान देखना बड़ा अच्छा लगता है। उसकी बॉलिंग पर जब विकेट गिरता है तब युजवेन्द्र के चेहरे पर खेल रही मुस्कान को ध्यान से देखियेगा। वह मुस्कान किसी आदिवासी की निर्मल मुस्कान है। उस मुस्कान को देखने के लिए उसकी बॉलिंग के दरमियान किसी विकेट के गिरने का इंतजार करता हूँ।

जिसे प्रकृति से प्रेम नहीं, वह दो बार मंदिर जाये या पाँच बार मस्जिद में जाये फिरभी वह नास्तिक ही है। समग्र सृष्टि प्रेम की विराट यूनिवर्सिटी है। आजकल उस यूनिवर्सिटी का वसंत सत्र (स्प्रिंग सेमेस्टर) चल रहा है। उस यूनिवर्सिटी में प्रत्येक आम्रवृक्ष क्लास-रूम है और श्यामल कोयल प्राध्यापिका है। वह अत्यंत मधुर स्वरों में प्रवचन करती रहती है। सही मायनों में कोयल विजिटिंग प्रोफेसर है क्योंकि वह हजारों किलोमीटर की दूरी तय करके हमारे गली-मुहल्ले में आ पहुँचती है। कोयल की मात्र एक ही कुहूक में हमारे द्वेष, हमारी इर्षा और हमारे अहंकार को घुला देने की ताकत होती है। हमारे लोग विद्वान वक्ताओं के रुक्ष प्रवचनों को सह लेने के आदती हैं। ऐसे लोग ध्यानपूर्वक पूरे मनोयोग के साथ कोयल की कुहूक सुनने के लिए तत्पर नहीं हैं। ऐसे लोग पढे-लिखे फिरभी `अनपढ़' लोग जंगल में जाने के लिए राजी नहीं हैं। यदि हमारे धर्मगुरु(महंत,मुल्ला,पादरी) ध्यानस्थ चित्तावस्था में कुहूक ध्वनि सुनते रहें,तो धर्म बच जायेगा और लाखों अंधश्रद्धालु अनुगामियों का कल्याण हो जाएगा। कोयल कभी भी बोध नहीं देती लेकिन वह तो दीक्षा देती है, वह प्रेमदीक्षा देती है। हकीकत में तो कुहूक जीवनदीक्षा का दान करती है। आज का कोई ऋषि यदि उपनिषद की रचना करे तो उनके शीर्षक कैसे होंगे? जवाब है: वृक्षोपनिषद,पुष्पोपनिषद,सूर्योपनिषद,विज्ञानोपनिषद और जीवनोपनिषद।

हमारा होना आम का पेड़ के होने से पृथक नहीं है। कोई अदृश्य और अप्रत्यक्ष विश्वचेतना दोनों को जोड़नेवाली एक सेतु है। जो कुछ अप्रत्यक्ष हो, वह `नहीं है' ऐसा किसने कहा? जीवन के मर्म की प्राप्ति के लिए सृजित खास ऋतु का नाम वसंत है। उस ऋतु का प्रत्येक क्षण आनंदमय है क्योंकि वह वसंतमय है।

नगर के किसी बाग के किसी कोने में बांकड़े(तीनचार लोग एकसाथ बैठ सके ऐसा लकड़ी ,सीमेंट या लोहे का आसन) पर बैठे हुए `मिले हुए जीव' को खलल पहुंचानेवाले हमेशा पुलिस नहीं होते,परंतु परिचित बड़े-बुजूर्ग होते हैं।`वंचित बुजूर्ग' मुग्धता नामक ऋतुकन्या को देखकर जल उठता है। जिस प्रकार ताजा अंगूर मधुर रस से छलाछल होता है,इससे बास्टी पर बैठी हुई मुग्धता के क्षण को जब `अंगूर दीक्षा' प्राप्त होती है तब प्रकृतिमाता आम के पेड़ पर आम्रमंजरी बनकर उस युगल को सदैव आशीष देती रहती है। उसे मालूम है कि बास्टी पर हो रही गुफ्तगू में प्रकृति का दिव्य संगीत निहित है।

अनवरत काम में व्यस्त पति से गुस्साये शब्दों का प्रयोग करके जंगल में खींच ले जाने का मौसम हमारे आँगन में आ पहुंचा है। रसोईव्यस्त उमदा पत्नी को चुटकी काटकर चिढ़ाने का यह मौसम है। जवान दिल जब मोबाईल पर गुफ्तगू कर रहे हों तब उन्हें खलल न हो, इस बात का खयाल रखनेवाले मातापिता वृद्धाश्रम में जाएँ ऐसी संभावना बहुत ही कम है। संसार अभी युद्धमुक्त हुआ नहीं है। उसके लिए वसंत वंचित बड़े बुजुर्ग जिम्मेदार हैं। पश्चिम के हिप्पी गंदे, अस्तव्यस्त और गैरजिम्मेदार तो हैं पर उनकी दुनिया में कहीं भी युद्ध या कत्ल-ए-आम के लिए कोई जगह नहीं। उनका जीवन `दम मारो दम'-जैसे गीत के हवाले है पर बड़े बुजुर्गों की बमबारी से कम नुकसानदेह है।

भोजन की थाली और फूलों की डलिया में जब पवित्रता का आरोपण होगा तब पृथ्वी पर युद्ध नहीं होगा। अन्नब्रह्म और सुगंधब्रह्म के बीच रहा जीवनसेतु समझ में आ जाए तब वसंत का आगमन आनंदब्रह्म का निमित्त हो जाएगा। सदियों से हीरा निरर्थक यात्रा करता आया है। वह हीरा एकदा जंगल में जाकर क्या कभी वापस आयेगा भी? एकबार मनुष्य पूरे दिल से जंगल में होकर आये, उसके बाद भी यदि वह जैसा था वैसा ही रह जाए-यह संभव नहीं है। एकबार आजमा लेना चाहिए। मैं जंगल का जामिन होने के लिए तैयार हूँ।

समझदारी

रामपुर के नवाब ने सुख्यात गवैये से कहा: ``मैं तुमसे संगीत सीखना चाहता हूँ।''
गवैये ने कहा: ``अवश्य सिखाऊँगा, लेकिन मेरी एक शर्त है।''
नवाब ने कहा:``बताइये।'' गवैये ने कहा : `` जो कोई भी उधार संगीत आप सुनते हैं, उसे सुनना आपको बंद करना होगा। उसके बाद ही आप सही संगीत सीख सकेंगे।''

संपर्क: 2 `शीलप्रिय',विमलनगर सोसायटी,नवाबजार,करजण. पिन 391240. जिला: वडोदरा.
गुजरात. मोबा: ९९२४५६७५१२.E.Mail Id: navkar1947@gmail.com

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें